Directorate of Distance Education
Kurukshetra University
Kurukshetra – 136 119


# एम० ए० हिन्दी (अंतिम वर्ष)

**Syllabus**

**SESSION-** 2018-19

## प्रशन पत्र : 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

**पूर्णांक : 100**
**लिखित परीक्षा : 80**
**आन्तरिक मूल्यांकन : 20**
**समय : 3 घण्टे**

**निर्देश:**

1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है–(क) संदर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न, (ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।
2. खण्ड–क संदर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ तीन कवियों (विद्यापति, जायसी, घनानन्द) की निर्धारित कविताओं में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अंश की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 (3 × 7) अंकों का होगा।
3. खण्ड–ख आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित कवियों (कबीर, सूरदास, तुलसीदास) और उनकी रचनाओं पर दो–दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 36 (3 × 12) अंकों का होगा।
4. खण्ड–ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां दस कवियों (सरहपाद, गोरखनाथ, अमीर खुसरों, नन्ददास, मीराबाई, रैदास, रहीम, केशव, भूषण, गुरुगोबिन्द सिंह) तथा उनकी कृतियों का द्रुत–पाठ अपेक्षित है। प्रश्न–पत्र में प्रत्येक कवि से सम्बन्धित एक–एक प्रश्न पूछा जाएगा, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड–घ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां खण्ड–क और ख में नियत छहों कवियों और उनकी रचनाओं पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 3 (1 × 8) अंकों का होगा।

**व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य–ग्रन्थ :**

1. विद्यापति पदावली, (सं०) रामवृक्ष बेनीपुरी; (वन्दना, नखशिख, प्रेम प्रसंग, वसन्त विरह = कुल पांच खण्ड)।
2. जायसी ग्रंथावली, (सं०) रामचन्द्र शुक्ल; (नखशिख खण्ड, नागमती वियोग खण्ड, नागमती संदेश खण्ड = कुल तीन खण्ड)।
3. घनानंद कवित्त; (सं०) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र।

**आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :**

1. **कबीर :** व्यक्तित्व और युग; भक्ति भावना, निर्गुण का स्वरूप, रहस्य–साधना, विद्रोह और समाज–दर्शन; भाषा; कवि के रूप में कबीर; निर्गुण काव्यधारा में कबीर का स्थान, कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; ......... ना हिन्दू, ना मुसलमान।
2. **सूरदास :** व्यक्तित्व और युग; दार्शनिक चेतना; भक्ति भावना; शृंगार–वर्णन; वात्सल्य वर्णन; कृष्ण और राधा का शील–निरूपण; सौंदर्य बोध; प्रकृति–चित्रण; गीतात्मकता; भाषा; भ्रमरगीत–परम्परा में सूर के "भ्रमरगीत" का स्थान; भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य; कृष्ण–काव्यधारा में सूर का स्थान।
3. **तुलसीदास :** व्यक्तित्व और युग; दार्शनिक चेतना; भक्तिभावना; लोकमंगल की भावना; रामराज्य की कल्पना; यथार्थबोध; रामचरितमानस, भरत चरित्र; चित्रकूट का महत्त्व; प्रबन्ध–कल्पना; कवितावली का काव्य सौष्ठव; रामकाव्यधारा में तुलसीदास का स्थान।

**संदर्भ–सामग्री :**

1. विश्वनाथप्रसाद मिश्र; विद्यापति; नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स; वाराणसी, 1979।
2. शिवप्रसाद सिंह; विद्यापति; हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1961।
3. राजदेवसिंह; हिन्दी की निर्गुणकाव्यधारा और कबीर; आलेख प्रकाशन; दिल्ली, 1980।

4. सरनाम सिंह शर्मा; कबीर : व्यक्तित्व, कृतित्व और सिद्धान्त; भारतीय शोध संस्थान, जयपुर, 1969।

5. यश गुलाटी; सूफी कविता की पहचान; प्रवीण प्रकाशन; दिल्ली; 1979।

6. राजदेवसिंह; पद्मावत : नवमूल्यांकन; पाण्डुलिपि प्रकाशन; दिल्ली; 1975।

7. भीमसिंह मलिक; जायसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र 1977।

8. रामचन्द्र शुक्ल : सूरदास; नागरी प्रचारिणी सभा; काशी, 1973।

9. 'संभावना; (सूर विशेषांक), हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

10. हरवंशलाल शर्मा; सूर और उनका साहित्य; भारत प्रकाशन मन्दिर; अलीगढ़, 1964।

11. भाग्यवती सिंह; तुलसी की काव्यकला; सरस्वती पुस्तक सदन; आगरा, 1962।

12. हरिश्चन्द्र वर्मा; तुलसी साहित्य में नीति, भक्ति और दर्शन; संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र, 1983।

13. संभावना; (तुलसी विशेषांक), हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1975।

14. कृष्णचन्द्र वर्मा; रीति स्वच्छन्द काव्यधारा; कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर, 1967।

15. लल्लनराय; घनानन्द, साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1983।

## प्रश्न पत्र : 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

**पूर्णांक : 100**
**लिखित परीक्षा : 80**
**आन्तरिक मूल्यांकन : 20**
**समय : 3 घण्टे**

**निर्देशः** 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है – खण्ड–क संस्कृत काव्यशास्त्र, खण्ड–ख पाश्चात्य काव्यशास्त्र, खण्ड–ग हिंदी काव्यशास्त्र और समीक्षा–पद्धतियों तथा खण्ड–घ व्यावहारिक समीक्षा से सम्बन्धित है। पहले तीन खण्डों से दो–दो प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। इसके लिए 42 (3 × 14) अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का होगा। पूरा प्रश्न–पत्र 42 अंकों का होगा।

2. खण्ड–घ के अंतर्गत कोई एक काव्यांश दिया जाएगा, जिसकी व्यावहारिक समीक्षा लिखनी होगी। इस खण्ड के लिए 10 अंक निर्धारित हैं।

3. प्रश्न–पत्र में समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इसके लिए 20 (5 × 4) अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक होंगे।

4. समूचे पाठ्यक्रम पर ही आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। इस अंश के लिए 8 (1 × 8) अंक निर्धारित हैं।

**पाठ्य विषय :**

**खण्ड–क संस्कृत काव्यशास्त्र**

| | |
|---|---|
| काव्य लक्षण | : काव्य हेतु; काव्य–प्रयोजन; काव्य–प्रकार। |
| रस सिद्धांत | : रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग (अवयव); साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा। |
| अलंकार सिद्धान्त | : मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण। |
| रीति सिद्धान्त | : रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ। |
| वक्रोक्ति सिद्धान्त | : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद। |
| ध्वनि सिद्धान्त | : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत व्यंग्य, चित्रकाव्य। |
| औचित्य सिद्धान्त | : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद। |

**खण्ड–ख पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

प्लेटो : काव्य सिद्धान्त;

अरस्तू : अनुकरण–सिद्धान्त, त्रासदी–विरचन;

लोन्जाइनस : उदात्त की अवधारणा;

ड्राइड्न : काव्य–सिद्धान्त;

वर्ड्सवर्थ : काव्य–भाषा का सिद्धान्त;

कॉलरिज : कल्पना सिद्धान्त और ललित कल्पना;

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य;

टी॰ एस॰ इलियट : परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा; निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त; वस्तुनिष्ठ समीकरण; संवेदनशीलता का असाहचर्य;

आई॰ए॰रिचर्ड्स : रागात्मक अर्थ; संवेगों का संतुलन; व्यावहारिक आलोचना;

सिद्धान्त और वाद : आभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद।

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडन सिद्धान्त, उत्तर आधुनिकतावाद।

**खण्ड–ग हिन्दी काव्यशास्त्र एवं समीक्षा–पद्धतियाँ**

**लक्षण काव्य परम्परा एवं कवि शिक्षा :** (केशवदास, चिन्तामणि, भिखारीदास, कुलपति, देव, पद्माकर, मतिराम के संदर्भ में)।

**आलोचनात्मक पद्धतियाँ :** शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौन्दर्यशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय।

**खण्ड–घ व्यावहारिक समीक्षा**

प्रश्न पत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

**सन्दर्भ सामग्री :**


1. साहित्यलोचन; श्यामसुन्दर दास; इण्डियन प्रेस; प्रयाग; 1942।
2. काव्य के रूप; गुलाबराय; प्रतिभा प्रकाशन मन्दिर; दिल्ली; 1947।
3. काव्यशास्त्र; भगीरथ मिश्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन; वाराणसी; 1974।
4. सिद्धान्त और अध्ययन; गुलाबराय; आत्माराम एण्ड सन्स; दिल्ली; 1980।

5. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका; नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाऊस; दिल्ली; 1953।
6. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त (दो भाग); गोविन्द त्रिगुणायत; भारती साहित्य मन्दिर; दिल्ली, 1970।
7. भारतीय काव्यशास्त्र; कृष्णबल; राधाकृष्णन प्रकाशन; दिल्ली; 1959।
8. भारतीय काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी; अलंकार प्रकाशन; दिल्ली; 1974।
9. भारतीय काव्य सिद्धान्त; काका कालेलकर; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद; 1969।
10. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी एवं शान्तिस्वरूप गुप्त; अशोक प्रकाशन; दिल्ली; 1978।
11. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-सिद्धान्त; गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद; 1990।
12. समीक्षा शास्त्र; दशरथ ओझा; राजपाल एण्ड सन्स; दिल्ली, 1972।
13. पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त; लीलाधर गुप्त; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद; 1952।
14. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त; मैथिलीप्रसाद भारद्वाज; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़; 1988।
15. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा; नगेन्द्र एवं सावित्री सिन्हा; दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली, 1972।
16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : सिद्धान्त और वाद; नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली; 1967।
17. हिन्दी आलोचना : उद्‌भव और विकास; भगवत्स्वरूप मिश्र; साहित्य-सदन; देहरादून; 1972।
18. हिन्दी आलोचना : अतीत और वर्तमान; प्रभाकर माचवे; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद, 1988।
19. मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना; पाण्डेय शशिभूषण "शीतांशु"; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली; 1992।
20. नई समीक्षा : महेन्द्र चतुर्वेदी एवं राजकुमार कोहली; विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय; दिल्ली; 1980।

## प्रश्न पत्र : 8 प्रयोजनमूलक हिन्दी

**पूर्णांक : 100**
**लिखित परीक्षा : 80**
**आन्तरिक मूल्यांकन : 20**
**समय : 3 घण्टे**

**निर्देशः** 1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है। प्रत्येक खण्ड से दो-दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किसी एक का उत्तर देना होगा। इनके लिए 48 (4 × 12) अंक निर्धारित हैं।

2. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इनके लिए 20 (5 × 4) अंक नियत हैं।

3. समूचे पाठ्यक्रम पर आधारित बीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनके लिए 12 (1 × 12) अंक निर्धारित हैं। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा।

**पाठ्य विषय :**

**खण्ड–क कामकाजी हिन्दी और हिन्दी कम्प्यूटिंग**

**हिन्दी के विभिन्न रूप** — सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम-भाषा, मातृभाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण; पारिभाषिक शब्दावली : स्वरूप एवं महत्त्व; निर्माण के सिद्धान्त;

ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली;

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र; वेब पब्लिशिंग का परिचय, इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय; प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र; इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप लिंक; ब्राउंजिंग; ई-मेल प्रेषण/ग्रहण; हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल; डाउनलोडिंग व अपलोडिंग; हिन्दी सॉफ्टवेयर पैकेज।

**खण्ड–ख पत्रकारिता**

पत्रकारिता : स्वरूप एवं प्रकार;

समाचार लेखन कला;

संपादन के आधारभूत तत्त्व;

व्यावहारिक प्रूफ शोधन;

शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक-संपादन;

संपादकीय लेखन;

पृष्ठ-सज्जा;

साक्षात्कार, पत्रकार-वार्ता व प्रेस-प्रबंधन;

प्रमुख प्रेस-कानून एवं आचार-संहिता;

**खण्ड-ग मीडिया लेखन :**

जनसंचार, प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ;

विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप : मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इंटरनेट;

श्रव्य माध्यम (रेडियो) : मौखिक भाषा की प्रकृति; समाचार लेखन एवं वाचन; रेडियो नाटक; उद्घोषणा लेखन; विज्ञापन लेखन; फीचर तथा रिपोर्ताज;

दृश्य – श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलिविजन एवं वीडियो) : दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति; दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य; पार्श्व वाचन (वायस ओवर); पटकथा लेखन; टेली-ड्रामा/डॉक्यू ड्रामा; संवाद लेखन; साहित्य की विधाओं का दृश्य-माध यमों में रूपांतरण; विज्ञापन की भाषा।

**खण्ड-घ अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार**

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि;

हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका;

कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद;

जनसंचार माध्यमों का अनुवाद;

विज्ञापन में अनुवाद;

वैचारिक साहित्य का अनुवाद;

वाणिज्यिक अनुवाद;

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद;

विधि साहित्य की हिन्दी और अनुवाद;

व्यावहारिक-अनुवाद-अभ्यास;

कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियाँ, पदनाम, विभाग आदि; पत्रों, पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों के अनुवाद।

**संदर्भ-सामग्री :**


1. विनोदकुमार प्रसाद; भाषा और प्रौद्योगिकी; वाणी, नयी दिल्ली।
2. प्रेमचंद पातंजलि; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
3. प्रेमचंद पातंजलि : आधुनिक विज्ञापन; नयी दिल्ली।
4. विनोद गोदरे; प्रयोजनमूलक हिन्दी; वाणी; नयी दिल्ली।
5. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव; प्रयोजनमूलक हिन्दी; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
6. दंगल झाल्टे; प्रयोजनमूलक हिन्दी; सिद्धान्त और प्रयोग; वाणी, नयी दिल्ली।
7. शिवनारायण चतुर्वेदी; टिप्पणी प्रारूप; वाणी, नयी दिल्ली।
8. शिवनारायण; चतुर्वेदी; प्रालेखन प्रारूप; वाणी, नयी दिल्ली।
9. माणिक मृगेश; राजभाषा हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
10. कैलाशचन्द्र भाटिया, राजभाषा हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
11. महेशचन्द्र गुप्त; प्रशासनिक हिन्दी; ऐतिहासिक सन्दर्भ; वाणी, नयी दिल्ली।
12. रहमतुल्लाह; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नयी दिल्ली।
13. भोलानाथ तिवारी एवं विजय कुलश्रेष्ठ; पत्र-व्यवहार निर्देशिका; वाणी, नयी दिल्ली।
14. भोलानाथ तिवारी; प्रारूपण; टिप्पण और प्रूफ-पठन; वाणी, नयी दिल्ली।
15. श्रीराम मुंढे; बीमा के तत्त्व; वाणी, नयी दिल्ली।
16. कृष्णकुमार गोस्वामी; व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप; वाणी, नयी दिल्ली।
17. बालेन्दुशेखर तिवारी (सं०); प्रयोजनमूलक हिन्दी; संजय बुक सैन्टर, वाराणसी।

## प्रश्न पत्र : 9 भारतीय साहित्य

पूर्णांक : 100
लिखित परीक्षा : 80
आन्तरिक मूल्यांकन : 20
समय : 3 घण्टे

निर्देशः 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है।

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या; (ख) आलोचनात्मक प्रश्न;

(ग) लघूत्तरी प्रश्न, (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड–क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित तीन पुस्तकों (अग्निगर्भ, वर्षा की सुबह, घासीराम कोतवाल) में से दो–दो अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक अवतरण की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 (3 × 7) अंकों का होगा।

3. खण्ड–ख आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित विषयों में से प्रत्येक उपखंड में से दो–दो (कुल छह) प्रश्न दिए जाएंगे, जिनमें से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। यह खण्ड 36 (3 × 12) अंकों का होगा।

4. खण्ड (ग) लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित विषयों में से ही दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। यहां व्याख्यार्थ निर्धारित उपर्युक्त तीनों पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 8 (1 × 8) अंकों का होगा।

**व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :**

1. अग्निगर्भ (बंगला उपन्यास); महाश्वेतादेवी।
2. वर्षा की सुबह (उड़िया कविता); सीताकान्त महापात्र।
3. घासीराम कोतवाल (मराठी नाटक); विजय तेन्दुलकर।

**आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :**

1. भारतीय साहित्य और भारतीयता

भारतीय साहित्य का स्वरूप; भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ; भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब; भारतीयता का समाजशास्त्र; हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

2. बंगला साहित्य का इतिहास

चैतन्य पूर्व वैष्णव साहित्य (10–15वीं शती) : विद्यापति, मालाधर बसु; मंगल काव्य : विजयगुप्त, नारायणदेव; चैतन्य वैष्णव युग (16वीं शती) : गौड़ीय–वैष्णव पदावली; चण्डीमंगल काव्य, चैतन्य जीवनी : चैतन्योत्तर युग (17वीं शती) : मंसामंगल, चण्डीमंगल, दुर्गामंगल काव्य; इस्लामी काव्य; नाथ साहित्य : आधुनिक युग (18वीं शती), बंगला गद्य [उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध का उदय और विकास], फोर्ट विलियम कॉलेज, राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रमेशचन्द्र दत्त, तारकनाथ गंगोपध्याय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आधुनिक कविता।

3. बंगला और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

बंगला वैष्णव काव्य परम्परा और हिन्दी भक्तिकाल; बंगला–हिन्दी नाथ साहित्य; बंगला मुस्लिम साहित्य और हिन्दी सूफी काव्य; बंकिमचन्द्र और भारतेन्दु : नजरुल इसलाम और निराला; आधुनिक बंगला–हिन्दी गद्य साहित्य (उपन्यास, कहानी)

**सन्दर्भ–सामग्री :**


1. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय; फोर्ट विलियम कॉलेज; इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 1948।
2. सुकुमार सेन; बंगला साहित्य की कथा; हिन्दी साहित्य; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2009 (वि०)।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी; मध्यकालीन धर्मसाधना; साहित्य भवन; इलाहाबाद, 2013 (सं०)।
4. परशुराम चतुर्वेदी; मध्यकालीन प्रेम साधना; आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1952।
5. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"; रवीन्द्र कविता कानन; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1955।
6. नगेन्द्र नाथ गुप्त; विद्यापति ठाकुर की पदावली; इण्डियन प्रैस, प्रयाग, 1910।
7. सुकुमार सेन; बंगला साहित्य का इतिहास; साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, 1970।

## प्रश्न–पत्र 10 (iii) सूरदास

**पूर्णांक : 100**
**लिखित परीक्षा : 80**
**आन्तरिक मूल्यांकन : 20**
**समय : 3 घण्टे**

**निर्देशः** 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है–(क) संदर्भ सहित व्याख्या, (ख) आलोचनात्मक प्रश्न (ग) लघूत्तरी प्रश्न (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड–क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तक (सूरसागर–सार) में से छह अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 21 (3 × 7) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित कवि सूरदास और उनकी कृतियों पर छह आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगें। यह खण्ड 36 (3 × 12) अंकों का होगा।

4. खण्ड–ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि और उसकी कृतियों पर आधारित दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। सूरदास और उनकी कृतियों पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 8 (1 × 8) अंकों का होगा।

**व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ : 12**

सूरसागर–सार; धीरेन्द्र वर्मा; साहित्य भवन प्रा० लि०; इलाहाबाद

**आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :**

कृष्णभक्ति–काव्य : परम्परा और प्रवृत्तियां; सूरदास का प्रामाणिक जीवन–वृत्त; जन्मान्धता का प्रश्न, सूरसागर : प्रतिपाद्य और मौलिकता; साहित्यलहरीः प्रतिपाद्य और प्रामाणिकता; सूरसारावली : प्रतिपाद्य और मौलिकता; साहित्यलहरी : प्रतिपाद्य और प्रामाणिकता; सूर की भक्ति–भावना; दार्शनिक चेतना; सौंदर्य–दृष्टि, शृंगार–वर्णन; वात्सल्य वर्णन; प्रकृति–चित्रण; ब्रज–संस्कृति एवं लोकतत्त्व, भ्रमरगीत का उद्देश्य;

भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य, कृष्ण, राधा, नन्द और यशोदा के शील-निरूपण; आधुनिक संदर्भों में सूरकाव्य की प्रासंगिकता, भ्रमरगीत-परम्परा में सूर-कृत भ्रमरगीत का स्थान; सूर का गीति-काव्य; संगीत-साधना; दृष्टिकूट-पदावली, भाषा; काव्य-रूप एवं छन्द-अलंकार-योजना; सूरकाव्य और कविता के आधुनिक प्रतिमान।

**सन्दर्भ सामग्री :**


1. सूर-साहित्य, हजारीप्रसाद द्विवेदी; हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर; बम्बई; 1956।
2. महाकवि सूरदास; नन्ददुलारे बाजपेयी; आत्माराम एण्ड सन्स; दिल्ली; 1952।
3. सूरदास; ब्रजेश्वर वर्मा; हिन्दी परिषद्; प्रयाग विश्वविद्यालय; 1950।
4. सूरदास; रामचन्द्र शुक्ल; सरस्वती मंदिर; बनारस; 1949।
5. सूरदास; हरवंशलाल शर्मा; राधाकृष्ण प्रकाशन; दिल्ली; 1972।
6. सूरकाव्य में लोक दृष्टि का विश्लेषण; मीरा गौतम; निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2000।
7. सूर-सौरभ, मुंशीराम शर्मा "सोम"; आचार्य शुक्ल साधना मन्दिर, कानपुर; 1945।
8. सूर की काव्य-कला; मनमोहन गौतम; भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली; 1953।
9. "संभावना" (सूर-विशेषांक); हिन्दी-विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; 1981।

## प्रश्न पत्र–10 (vii) हरियाणा का हिन्दी–साहित्य

**पूर्णांक : 100**
**समय : 3 घण्टे**

**निर्देशः** 1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है–

(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या,

(ख) आलोचनात्मक प्रश्न,

(ग) लघूत्तरी प्रश्न,

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

2. खण्ड–क सन्दर्भ सहित व्याख्या से सम्बन्धित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तक (कविता यात्रा – छः) में से छह अवतरण दिए जाएंगे, जिनमें से किन्हीं तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगा। यह खण्ड 21 (3 × 7) अंकों का होगा।

3. खण्ड (ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से सम्बन्धित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित विषयों में से छह प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह खण्ड 36 (3 × 12) अंकों का होगा।

4. खण्ड–ग लघूत्तरी प्रश्नों से सम्बन्धित है। निर्धारित प्रश्नावली में से दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 × 3) अंक निर्धारित हैं।

5. खण्ड–घ वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से सम्बन्धित है। इस खण्ड के लिए एक नयी पाठ्य पुस्तक (कहानी–यात्रा : सात) निर्धारित है। इस पाठ्य पुस्तक पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 8 (1 × 8) अंकों का होगा।

**व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :**

हरियाणा प्रतिनिध कविता; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1992।

**वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के लिए निर्धारित पाठ्य ग्रंथ :**

हरियाणा प्रतिनिधि कहानियाँ; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1991।

**आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :**

**हरियाणा : प्रागैतिहासिकता एवं नामकरण; साहित्य–सृजन की प्राचीन परम्परा;**

जैन काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाथ–सिद्ध काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; संत काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; सूफी काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; रामकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; कृष्ण काव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; महाकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; खण्डकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; मुक्तकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाट्यकाव्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; पत्रकारिता : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; निबन्ध : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; आलोचना : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; उपन्यास : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; कहानी : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; लघुकथा : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; बाल साहित्य : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नाटक : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; एकांकी : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; ग़ज़ल : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; नवगीत : परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ; हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान।

**सन्दर्भ–सामग्री :**


1. हरियाणा : एक सांस्कृतिक अध्ययन; साधुराम शारदा; भाषा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़ (पंचकूला); 1978।
2. हरियाणा में रचित हिन्दी साहित्य; सत्यपाल गुप्त; भाषा विभाग हरियाणा; चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1969।
3. "सप्तसिन्धु" (हरियाणा साहित्य विशेषांक); भाषा विभाग हरियाणा, चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1968।
4. हरियाणा का हिन्दी साहित्य : उदभ्व और विकास; शिवप्रसाद गोयल; नटराज पब्लिशिंग हाऊस, करनाल; 1984।
5. हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान; शशिभूषण सिंहल एवं सत्यपाल गुप्त; हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ (पंचकूला), 1991।
6. हरियाणा में रचित सृजनात्मक हिन्दी साहित्य; रामनिवास "मानव"; कृति प्रकाशन, दिल्ली एवं हिसार; 1999।
7. "संभावना" (हरियाणा का हिन्दी साहित्य विशेषांक); लालचन्द गुप्त "मंगल"; हिन्दी विभाग; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 2001।
8. हरियाणा की हिन्दी काव्य सम्पदा; शक्ति; सत्य–सुन्दर प्रकाशक, दिल्ली; 1977।
9. हरियाणा के हिन्दी प्रबन्ध काव्य; महासिंह पूनिया; निर्मल बुक ऐजन्सी, कुरुक्षेत्र; 1998।

10. हरियाणा में रचित हिन्दी महाकाव्य; रामनिवास "मानव"; अनिल प्रकाशन, दिल्ली; 2002।

11. हरियाणा की हिन्दी कहानी; उषा लाल; निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली; 1996।

12. हरियाणा में रचित हिन्दी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन (अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध); किरण बाला; हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 1996।

13. हिन्दी उपन्यास साहित्य को हरियाणा का योगदान (अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध); सुखप्रीत; हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; 1997।

14. हरियाणा का लघुकथा संसार; रूपदेवगुण एवं राजकुमार निजात, राज पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली; 1988।